



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.  
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website  
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhed  
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade  
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi  
<https://egangotri.wordpress.com/>



M. 2704

शिर्षक	ग्रंथकार	विषय	विस्तार (पूर्ण/ अपूर्ण)	टिकाकार	आकार	पृष्ठे	लिपी	सामग्री	Lines per page	Letters per line	Condition & age (शके/विक्रम संवत्)	Additional Particulars / Remark
श्री गवनाथ ज्ञानाय - २४	—	कथा	पूर्ण —	—	५/४	५७	मराठी	कागज	१०	२४		



श्रीगणेशाय नमः ॥ जयजयाजी जगदा

निर्विकारा ॥ अत्क मानस-चकोर-चंद्रा ॥ जेभा बुधाराया सरसी ॥ १ ॥

तरी वंसतां कृपाकुआई ॥ मायमाझे विठावाई ॥ तरी आता ग-  
य-

मवाही ॥ येरुनिया बैसंगे ॥ २ ॥ मागिले अध्यायीं नेमे करुन ॥

॥ बैभकीमे क विठराव विक्रम ॥ भारी संगमीं पिंगला उग्र ॥

दृष्टानुग्रह लाधला ॥ ३ ॥ उपरी मृगया करुन ॥ अवंगिके स्थाना

जाऊन ॥ राजधामी कनकासन ॥ सभासंडी बैसला ॥ ४ ॥

क्षणैक बसून वारिणा वारिण ॥ पाक हाके गेला नृपक्ष नाथ ॥

पक्रान्त सेवून अंतःपुरांत ॥ पिंगळे मृही संधरे को ॥ ५ ॥

कनकमं चकी सुमन गोजीं ॥ राव बैसवी पिंगला अजी ॥ जोड-



भक्त गोप चोरे करुन पूजी ॥ आधोपुर्व क पिंगला ॥ ५५ ॥ ~~ने नानी~~ नय

१ ~~ने नानी~~ ॥ परम श्री ली भावा रुढ ॥ रायें दर्श विले - अं  
२८

चि ली कोडु ॥ मग करी कव कून स्नेहपाडु ॥ निहट

धेल पिंगल ॥ ७॥ लेवा सां कौं बै सवोन ॥ परम

श्री ली ने धेल बुंवन ॥ वाचे ने म्हे लुज समान ॥

अन्य दाश नाव दुली ॥ ८॥ अगे पिंगले माझे मन ॥

भाव ले मम दे हीं चे दे क्य रल ॥ जे से मि न आ पि

र मि चि न्ह ॥ दे क्य दे हीं मि र व ली ॥ ९॥ कौं राज मी की

लेज आ ग का ॥ द्विती ये शे भली त्या ची क का ॥ ले



वींमाले वूं पिंगला ॥ मम चित्तं परं ध्याये ॥ ११ ॥

अगे हे पिंगले माझा भाव ॥ पिंगला भर्त्तरी देव्य

नांव ॥ दाका च देहो मज वाढीव ॥ भासे भाष्य शुभा

नने ॥ ११ ॥ जे श्री शक्र आषि गोडो ॥ नामा भिन्न-

परी देव्य सोढो ॥ लेवी वूं पिंगला माझे पाढो ॥ भा

सभासे शुभानने ॥ १२ ॥ जे सा उदयो आणी लहरी ॥

परी देव्य लासा गरी ॥ लेवी माले वूं सुंदरी ॥ भास

भास श्री शुभानने ॥ १३ ॥ असे म्हणून परम मोली

पुनः चूं बनवेल नृपली ॥ मग भोगून सका मरीती ॥



म. २० संलुष्ट चि चो मिरव का ॥ १४ ॥ मग विचार सुचला राक नव

२ गहन ॥ आनंदे वै सली प्रीती करुन ॥ वै सल्या पि न. २८

गला बोले वचन ॥ विडा नयो दश गुणी देल से ॥ १५ ॥

मृगे महाराजा हेन पवरा ॥ सम देहें चे प्राण प्रिये श्वरा ॥

मम मान सच को रचं द्रा ॥ प्रेमां बु मिरव ल से ॥ १६ ॥

तरी लुहा आ हां गांठी ॥ गांठी गांठि ल्या कृ ए परमेष्टी ॥

गांठि ल्या परी चित दे ठी ॥ दोष्य भ्रास भास ल से ॥ १७ ॥

जे भे लवण बुद्धीं मि मिल ॥ मिन्न नदा की दृष्टीं ल ॥

ल न्या ये ऐष्य चित ॥ शवराणी शो भल से ॥ १८ ॥



तरी हे मा मि मि त अर्थ ॥ उदया पावला असे होय चित्त ॥

परी ने पूनो ने दये परम कृत्तांत ॥ जगामा जी मिश्रत से ॥ १९ ॥

चित्त चित्त द्वि जित्वा फाया ॥ हरिण करित से शया ॥ तरी

ने ने आपण विषय चित्तया ॥ बुद्धि जरी संचरतौ ॥ २० ॥

संचरतां परी ए कृत्या ले ॥ माले दि सल उचित्तया ॥ लु म्हा

आ थीं माले मृत्यु ॥ मुगम चित्तावा ॥ २१ ॥ - तरी

हे से इच्छे ल्या प्रमाण ॥ इधर सचे आले च हो न ॥ मग

परम करये देवदान ॥ जगौ असे मोहाक ॥ २२ ॥ हे से बो-



भक्त ललां शुभाननं ॥ शयने कून बोले वाणी ॥ ने नों सखे ईश्वर क

३ रणी ॥ पुढील कां ही वेद वेना ॥ २३ ॥ सज आधीं लव कामिनी ॥ २८

मृगु पावों इच्छि सौ मनी ॥ परं तु ने जो ने दिय पनी ॥ मि-

भास जमि रव लसे ॥ २४ ॥ लो कदा न जाणे वेद विधी ॥ स

दाव ललसे विद्यु बुद्धी ॥ ने जो मन मृगु तु ज आधी ॥

आ ल्या काय कर शील ॥ २५ ॥ रोसें ऐ कून वदे पिं गला ॥ ने

नों कसें असें जी भाका ॥ रोखे ली विधी ने अक क कका ॥ क

कलना हीं महा राजा ॥ २६ ॥ परी ऐ श्या घड ल्या गो वी ॥ मी



शहणा रना हीं म हो पा गीं ॥ देह दा हन या हो वा हो ग म मे ॥

शैल सां सह ॥ २७ ॥ शव हो कून बोले वचन ॥ पुरे आलां लु

हो बोले ॥ प्राणा हन प्रिय कोण ॥ चाल ल्या चा कर वेना ॥ २८ ॥

लरी हे बोले कु गले ची प्रोले ॥ माझे या लोषा चे करती मो-

ला ॥ परिसमय ये लां पाऊला ॥ मार्गो चे धां व धां वील से ॥ २९ ॥

तरी अनुभव माझे ये ला ॥ सहज आहे मज ला पाहलां ॥ अगे

रा ज्या सनीं विपुल वाली ॥ सेवक श्रवण माझे करि लाती ॥ ३० ॥

करि नौ परी कै शारी ली ॥ समरंगणी चा भाव दा वि ली ॥ शभु अ-



भ.स.

नव

अ.

२८

नलप्राणाहूतौ॥ वंचयेसेमंजलात्तौ॥ ३१॥ तारी समयपडगाह्यौ॥

४ जीविवरक्षीगीबाराचार्यो॥ मगकोणकोठीउमोहपोटी॥ जीविव

चार्यगींगे॥ ३२॥ तारीहें तैसैं तुसें बोळवें॥ द्यावितीभावे-चांगुल

पणें॥ परीसमयपडतांअर्थभिन्न॥ दुसराचिआहेगे॥ ३३॥ कीबहु

रुपीधाचेखेळींमेळी॥ होऊनबैसलीमहाबळी॥ परीतेमूरव-

पणाचीनहाळी॥ सपरभूमीचाळेता॥ ३४॥ कींआनपुच्छाची

कैशीफुग्या॥ परीहारतेचिपडेवळीदेखता॥ जैसीपाळीची

दृष्टीदेखतां॥ वृश्चिकनांगीफुगरीतसे॥ ३५॥ तन्माथतवबो



कथं॥ माते दि सले सह जस्थिनीने॥ ऐसे बो कला भर्त्ता र

दने॥ पिंगला वदे रन्वा मीसी॥ ३८॥ मने महा श जा प्राणे-

धरा॥ या बोला चाचा गदोरा॥ कं गी बां॥ चैला आहे नरा॥

का थाचा चा मानसी॥ ३९॥ लरी आला व्यर्थ बो कून॥ ने

जो च डेल अर्थ कोण॥ इधर सले चें प्रमाण॥ ब्रह्मा दि-

कां न के ना॥ ४०॥ परी मा झिये भाव ने ऐसे॥ येत आहे

स्व॥ चैला स॥ वैधवा श दुश शैश स॥ लिपु हे जार ना

हीं वी॥ ४१॥ जरी हणा क न शा व रु न॥ लरी का थाचा-



प्र. २॥ च। चैतनमन ॥ लु हां का गीं ने ले अपे ने ॥ साक्ष अ से ई

२ धरलो ॥ ४॥ लरी ई धरलो मया मित ॥ आ हे मृग

नव  
अ.  
२८

लीक स नू ल ज ग ल ॥ लरी वे ध व्य श दू ज ग मु र वां ल ॥

लि स हो पार ना हीं नीं ॥ असो बीज पे रि ले तै सें फू क ॥

दु स को मा दि दा वी स नू क ॥ ले वी मा झी चा ली सर क ॥ फू ल उ

म टे क ले सें ची ॥ ४२ ॥ हे सें बो लू न। ने वां प णी ॥ स्न अ श

हि ली का मि नी ॥ प री श या चे अं लः क र णी ॥ श दू स दू ह मि र

व ले ॥ ४३ ॥ मि र व ले प री ठे वि ले म नां ल ॥ च म त्तार पा हूं को



ने दिवसं ल॥ असौ हे नल्प बहु दिनां ल॥ सार ते इना ले  
प्रीती नै॥ ४४ ॥ महज को जे एके दिवशीं॥ राव जात से  
पार थी सौ॥ मृग या रे कलां विपि नी सौ॥ आठव इना लकां  
ले चा॥ ४५ ॥ कीं आ सौं उभयलां दोधे जण॥ बैस लो हो लो  
सुरव संपन्न॥ तथा मा जी मृत्यु बो लोन॥ निश्चया वै ले कां  
ले ने ४६ ॥ सु सौं इना लिखा गल प्राण॥ लु फा सवे करी न गमन॥  
लरी त्या बोला चें सा चपण॥ आज पाहूं निश्चये ४७॥ रो सी  
चिचीं यो जना करु न॥ मृग या करी ल फेरे कानन॥ लो अक



प्र.सा.

स्मान्दोखे लनयनें ॥ मृगाकृनेटका ॥ ४८ ॥ शवदेखलीहि

थापाठी ॥ लग्नशीघ्रमही आहाटी ॥ शीण। चैत्याजीवबहुमेक

४०  
२८

शीटी ॥ मृग। निवंत धरियेला ॥ ४९ ॥ धरियेला परीहस्तें करुना ॥

लयाची ग्रीवा छेदून ॥ मुगुटा सहकाढून भूषण ॥ रुधिरें वस्थ

मिजाविलें ॥ ५० ॥ मिजको नीचां सेवका हातीं ॥ देला इना

लाशी घनृपली ॥ अन्यभूषणें उभ ॥ धूनकांली ॥ सुखास

नीयेसला ॥ ५१ ॥ उचमछां यापाहून ॥ लथारवालीं नृपजा



कन॥ उत्तम-चीरकनकवर्ण॥ मृदुगालिका अंथरल्ल॥ २२ ॥

तथावरी बैसून नृपती॥ मंड कदुराक न बसे एकान्ती॥ वरीरुधीरवस्त्र

जथाहांती॥ तथाकागीपा-चारी॥ २३॥ मृगेहेर लकवस्त्रधेकन॥

सेवकापिंगले-वेस्थान॥ वस्त्रलीगेंगो-चरकरून॥ रावनिभा-

लामृगावे॥ २४॥ निभाकापरीकैसेरीती॥ जरीपिंगकाबोलेक

रुक्मी॥ तरीव्याघ्रसंधानीजीवित्वागृही॥ चेडनिपांपकाळा॥ २५॥

देसेंवदोनरावभृष्टासे॥ गुपुपाठविकाअवंगिकेये॥ राजसद

भाजाकनिभृष्टे॥ पिंगलेयेविकोकिळे॥ २६॥ मौकीचरासह



भक्त्या

७

सकृत् ॥ रुधिरव्य कवसें सवक ॥ पुढे ठेके न कुरक मक ॥ जी ॥ २८

इति यां बोक्तसे ॥ २७ ॥ म्हणे जी महा राज मही स्वामिनी ॥

मृगया करित राव नाननीं ॥ अवचित व्याध जा कीं तुनी ॥

ठळी राथान कळली ॥ २८ ॥ मागा हून भाधून ठडुण ॥

रावध रिता ग्रीवे कारण ॥ धरितां च हरुन प्राण ॥ रुधिर

पिरुन पळाली ॥ आली त्याचें करुन दहन ॥ चमू येईल

सकृत् परलो न ॥ रोसे पिंगळे नैरो कून ॥ हृदय पिटी आ

कोरी ॥ २९ ॥ हृदय पिटून मही वरली ॥ भावे आपटी निष्ठुर



गली॥ अहामृणुन केश हली॥ धरु निधां लुं चित्त से ॥ ६१ ॥

शद्वरुन अट्टास्य॥ हंवरडा मारुन कदास॥ पुनः म सिले

मस्तकाश॥ चारंवार आफकीलसे ॥ ६२ ॥ मृत्तिका ये कूनटाकी

मुखाल॥ मृणु हा हा जी प्राणनाथ॥ कैसेरा कून गे लंत माते॥

पर न देश भुव नासीं ६३ ॥ अहामहा राजा प्राणे धरा॥ कूपीं का-

पिल के सादो श॥ अहल व प्रीती चा मोह हर॥ आज के

सा आटल जी॥ ६४ ॥ अहो मम प्राणनाथ॥ मजवीं

नु संक्षेप गमन कला॥ प्रीती सो हुन कैसे आती॥



भ.सं.

परभदेरागमलेली॥६६॥रोसेंमृणुन आरंभकली॥लो अंतेः

मं.  
२८

पुरीसमजलीमाता॥स्त्रियाशजाच्याद्वादशशला॥आरंभक

लपालल्या॥६६॥एकदृढयपिरिलीआपुलेहस्तो॥एक

धांवलीमहीपडली॥एकरोकलांयोगेलीवरली॥महीका

मीमूच्छीली॥६७॥एकहंवरडाफोडूनठव्ये॥मृणुलीआमुचा

गेलाविद्य॥आतामहीलेस्त्रियावृंद॥हीनवलडागेफी॥६८॥

रोसेंमृणुन आरंभकली॥एकसेकींच्यागळपडली॥दृढयपिदून

आपटिली॥महीकागींमस्तकले॥रोसासकळअंतःपुरांली॥



कोल्लक के ल अद्भुत ॥ परी पिंगल दाश प्रीती बहल ॥ शोक कुरी  
 आ कुरी गें ॥ ७१ ॥ मृणमहा राज निठक वाणी ॥ मज के से गे ले ल  
 जी सांडोनी ॥ मम मोह हृ<sup>सकक</sup> ची ल र जी ॥ लोपो नि यां महा राज ॥ ७२ ॥  
 बाळा हन मोह अ ल य ल ॥ मज वि वयीं पा नी ल हो ले ॥ लो मोह  
 व डु नि नि पुर वं ल ॥ सांडु न के से गे ल ली ॥ ७३ ॥ अ हो नु मी  
 शया सिं हा मनीं ॥ वमल अ स लीं राज क्रा र जीं ॥ परी मम स्मरण  
 हो तां मनीं ॥ ये सी धा वून सद नीं ल ॥ ७४ ॥ दो से मृ जो न ध र जी वर  
 शरीर ॥ पिंगल श की वारं वार ॥ आ जिस क क सांडो न रा ज्य भार ॥  
 के सा गे ल सी महा राजा ॥ ७५ ॥ पा हन मा झे मुख मंडु न ॥ पु न्ह से



भ.स.

वैसीराज्यासन॥ मोहआजीसककसांडोन॥ कैसागोलाभीमहारे

न.प.

जा॥७६॥ अहापिंगलम अंडजखाणी॥ कोठेंगेलीसमम पाक्षिणी॥

अ.  
२६

दाहीदिशावोसकरुनी॥ अचररानीचशवथा॥७७॥ समपा

इसाचीहरणी॥ परभभृणगोडुपाहणी॥ तिकुडेचीगुंतलीभीभेक

रुनी॥ माझाकामसांडोनीयां॥७८॥ आहामजआंधक्या

चीकाठी॥ हिसकूननेलीनिर्दयपारेटी॥ कींधुधिलाचीअन्न

वाटी॥ जिनूननेलीभयंगे॥७९॥ अहाश्याममवांचून॥ तूलेंग

मलनहलेहकक्षण॥ आजानिषुरमनकरुन॥ कैसागोला

सीमहाशभा॥८०॥ आहाश्याउत्तमपदार्थ॥ जोमहीलगगीउप



नहोत॥ लोममआधीं नृपनाथ॥ भक्षितेजना हीं कृधीं कीं॥ ८०॥ मा

ले बैभवो न निज अंकास॥ मुखी ओपीत होलांग्रास॥ ऐसे प

री सांडो न प्रीतीसा॥ पर न वै से गेलीं॥ ८१॥ ऐसे पसी नाना गुण

आकुंदल से आठवून॥ मग ते से वनाले पाचारुन॥ शय्या भाहिल्य

कुरवील से॥ ८२॥ शय्या मोकीचा चि मुगुटा॥ परिव्रानी क बरा अलो

टा॥ स्फुरण दाटो निमज बळकटा॥ उत्तम चिरीं क वकीला॥ ८३॥ स्वा

मीचे वस्त्र परिव्रान करुन॥ घेती ह्या लीसलीचे वाण॥ स्मशान

वरि केचे ले साधन॥ सिद्ध केले लाह्लाक॥ ८४॥ मग सकळ समा



म.स.

न.स.

अ.

१० ~~सक~~ भासहित॥ ये विज्ञाती समान वटि केत॥ अग्नि कुंडीं विधाने लोके॥ २८

पाहून वटि अंगार नीली॥ धग धग गोने कुंडा प्रली॥ पाव कुरा

ली दा। वेल से॥ ८८॥ ऐसे या प्रकुरणी पेट विज्ञ वन्ही॥ होला पाल

ली सोदा मिनी॥ अग्नि कुंडीं शिवा स्थापोनी॥ निरोप नोगे सवीले॥ ८९॥

सकळ देऊ न आशी वचन॥ जे जे भला दोखे मणे न॥ लुहो देह

लुग अपणे॥ शी घका की हो कुळा॥ ९०॥ ऐसे मणे न अग्नि कुंडा ल॥

सां डि ली द्वा ली स्व शरी शले॥ परी त्या वा वकी होलां स्थित॥ गुंडा को

१०



नगेलीभर्वस्वी ॥८८॥मगले याचक अ पारजन ॥धन्य मृगलीत

याकारण ॥स्वदिल के लें पिंगलेनें ॥स्वामी सवे गमानेथा ॥८९॥

अहापिंगलगरोसें मृगली ॥पावै भजथास एवली ॥उदार कर्ण दियकु

का प्रती ॥पर कुकालें लारीत ॥९०॥भर्तरी परी करितां लोक ॥

विदक चिचीं करि ली शोक ॥मृगली आहा प्रजेचें दों दिनु ॥इधि

रेक सेने लें हे ९१ ॥रोसें मृगोन आकंदली ॥भर्तरी मृगोन आ

ठविती ॥असोपावकीं दा होन सली ॥लोक कुठले साचोरो ॥९२॥

आपु<sup>ला</sup> ~~ला~~ त्यासदनीं जाकुन ॥बसले असली मुखवाकवोन ॥

अहाभर्तरीरोसें मृगोन ॥स्वामी आस सोडिती ॥९३॥आ गिर



भ.स. जसदनीं स्नेया मेक ॥ शोक करि लीअ विबुं बक ॥ लोयेरी कहुं वि

११ पिनीं नृपाक ॥ मृगया करुन येत मे ॥ ६५ ॥ लोअस्ता से गे ॥ २८

चंडमणी ॥ शभदाटकी परमविपिनीं मृगो निराजा दुगे नी ॥ नगश

प्रतीचा ले जा ॥ ६६ ॥ पाव बुले जो दै दिव्य मान ॥ हि लाल मागी

मदो सुकरुन ॥ परी भूषपाठ विलव स्ने देऊन ॥ आठवल याचा

पैङ्गल ॥ ६७ ॥ शवबभून सुरवा सनीं ॥ येतां मागीं मशाली पेट

योनी ॥ लांत चंद्र ज्यो लोश गी समानी ॥ दिशे लगीं उजकली ॥ ६८ ॥

आठव होलांच मृणे चिंतांत ॥ अबु विपणें रिंथे थांचो जाव ॥

नेजो गृहीं कै सीमात ॥ चडोन आली असेक कीं ॥ ६९ ॥ म्यांही के



लें मूठ पणें ॥ गोध के लना हीं आगे का पाठ वोन ॥ सकळ भ्रांती  
 ल। चैत गों वोन ॥ पाठी लाग लों मृगाच्या ॥ १० ॥ परी मालें दि सलें  
 अहिल ॥ मूर्ख पणा घेत का स्व पद संत ॥ हे सो। चें ला करि व करे  
 ल ॥ अवं तिके पाल का ॥ ११ ॥ परी यांत भोले कल्पना घेली ॥ विं  
 ग का दाहिणी पाव कश ती ॥ लों हा। विक्रम नृपली ॥ गोधा के सा  
 अंल रत्न ॥ १२ ॥ आगे जो मृध आग व स्त्रें घे कुन ॥ लेणें वें से पा  
 हिलें निवाणे ॥ परी लो। पिंग ले ले व स्त्रें दे कुन ॥ आका होता अर  
 यं ल ॥ १३ ॥ परी राधा चीन पडून गां धी ॥ कट कशौ घेलीं मही  
 काठी ॥ मग लो अरत्त मान होलां रोवटी ॥ कट का लागीं



भ. सा.

१२

मिकाका ॥ ४ ॥ आनि एतसमयीं ने कुम नृपवर ॥ सैवैलें होले मालु

कचर ॥ मिथुके मजा कुन समाचार ॥ स एव म्या चो बेल से ॥ ५ ॥

मग सुमली प्रधान च सुमहील ॥ शुक्रावै कुम राया दि प्राज्ञवं

॥ ६ ॥ सकुच मंडली ही शान भरिल ॥ शया भवें गेली ली ॥ ७ ॥

रही ॥ तैलुके रचि था मंडक ॥ ग्राम जना दि रक्ष पाक ॥ सकुच

अ बुद्धी के वक ॥ ज्यांल श चि ना लु डकी ॥ ८ ॥ ऐ सा स मथ आ

लाव हुन ॥ लौ एंल ही च डके अ पार वि न्य ॥ पिंगल अ बुद्धि

पणें रल ॥ दे हंल र पावली ॥ ९ ॥ असो पाहि ली भार्गवाट ॥

शव भली शी च मुनेट ॥ ये कुन अयं नि के निकट ॥ ग्राम

न.

म.

२८

१२



द्वारीसं चरत् ॥९॥ लं वले कुठोन द्वार पाक ॥ शया समोर झाके

सकक ॥ आश्रय मोनून कुटावेक ॥ शया प्रती वदता ती ॥१०॥

हजली परी के से रिती ॥ न मो ल रे मंजू क करिती ॥ मुजारे करु न

नि वे दि ती ॥ पिंगले चा वृत्तांत ॥११॥ हजली महा राजा दिन

मणी ॥ भूषण क आ का वं नां लुनी ॥ लो दु श्रिये नृ व दो न

चा जी ॥ ग्राम बुडु वि ला गो फांत ॥१२॥ परी त्या शे का ची

उ च्छानि की ॥ सली पडु की सु सती वा सी ॥ नर ह्वा मि नी पैंग

का द वा डी की ॥ पर न देशी म स की से ॥१३॥ लारी । ति ये ची करु न बो

क व प ॥ आ ली । चै गृही भ क क जन ॥ स्म शान्ति रि का झा की भ



म. सा.

१३

स्म॥ एक प्रहरोत्तरा ॥ ११ ॥ ऐश्वर्यं शक्यं कृत्वा वचन ॥ परमचाप

॥ इत्येवं संतः करुण ॥ मग सुखासनां लून ठडो टाकून ॥ स्मशान

वटिके पालकां ॥ १५ ॥ पालका परीक्षा कुंदल ॥ अट्टहास्य गडू करि

ल ॥ लगव गें आले धांवले ॥ स्मशान वटिके जव की पै ॥ १५ ॥

पालका परीचम भागें ॥ करि ल जाव से आले काग ॥ सकुंकुंक

वृद्ध योग ॥ शयालागीं कुव किंती ॥ १७ ॥ शव जालां ~~समस्त~~

शान महीसी ॥ पहाल पिंगळेचे चैलेसी ॥ शव विंशमी होऊन

मानसी ॥ दुडी टाकूं मणलसे ॥ १८ ॥ परीलेच मूमे किंचे गृहस्थ

थोर ॥ शयास कुव कुन धरिती संमग ॥ स्मशान कुंडींचा वैधा

नव

म.

२८

१३



नर॥ वेष्टुनैथां वै सके ॥ १९ ॥ परीशवले दुष्टे शीं ॥ प्राण चाले

इच्छीमानसीं ॥ परीवेष्टुन पदुलां शरीशसी ॥ उपाय कांहींचाके

नी ॥ २० ॥ मगवसल्या गयीं आरंभकल ॥ महीमस्तकांले आप

टिल ॥ दृढय पिटून शोफ करिल ॥ मुच्छने लगतीं पावतसे ॥ २१ ॥

मुच्छगी गेले आपुन्हा उठत ॥ अग्नि आहूतीयाव थापहात ॥ परी

अपारज गावें वेष्टुन बहुला ॥ बळव कांहींचाके नी ॥ २२ ॥ दुष्टी

करून आपुन्हा माथा ॥ घडी घडी पाहोपेग का चित्ता ॥ अहामुणो

न भाकत वलां ॥ महीलगतीं आपुकी वसे ॥ २३ ॥ आपुन

आठवीपेग केचे गुण ॥ मजे कैसी वोगे कै समज सांडून ॥



म.सा.

म

मालें मृगु महीठे रुन ॥ परभ कै सीझा ली स ॥ २४ ॥ हे विंगले लुझो म

न ॥ गमत न दले मजवांचुन ॥ आलां कै सी निष्ठुर हो रुन ॥

परभ देशी गेली सलं ॥ २५ ॥ हे विंगले लुझा सीपली ॥ नदलो गम

हो तो या जगली ॥ कै से जलुन कुल मली ॥ भस्म लुते म्यां कै ॥ २६ ॥

अहमो पाले लुष्ट दुर्जन ॥ मृग मली ने चेल ला प्राय ॥ लरी भी कु

झाग भु पूर्ण ॥ पाले न भजे विंगले ॥ २७ ॥ रो से भजो न अंग धरणी ॥

टाकी हा हा शदु करे नी ॥ दृढ धा विटी दणा जो नी ॥ मही मस्तक आ

कळी लसे ॥ २८ ॥ आ हा विंगल मणो न ॥ हा न मारी अट्ट हस्ये

कुरुन ॥ आ हा विंगले दो कल व वदन ॥ मज दृष्टी दावीं कां ॥ २९ ॥

म.च.न.  
म.न.

२८

१४



अहा पिंगले परम भुवनीं ॥ गेली समा ले लूं मांडोनी ॥ दृढाविरीदणा  
 गोनी ॥ मही मस्तक आ फकील से ॥ ३० ॥ हे पिंगले आसनीं शयनीं ॥  
 मज बसवील होलीस अंलः करणीं ॥ आलां माझा विसरथ गेनी ॥  
 कैसी राह सी परम ॥ ३१ ॥ अहा पिंगले लूज वांचून ॥ सर्वत्र मा  
 ले दिशे शाशुन्य ॥ अहा पिंगला माझा प्राण ॥ कुडी राकून गेली से ॥ ३२ ॥  
 अहा पिंगले लूज वांचून ॥ सर्वत्र मा ले दिशे शाशुन्य ॥ शून्य मं दिशे  
 निद्रा शयन ॥ कैसे येइल सांगपां ॥ ३३ ॥ अहा पिंगले माले आये  
 क ॥ जाणल होलीस लुषाभूक ॥ आलां निद्रा मन केले निवृ ॥  
 कैसी मांडुन गेलीस लूं ॥ ३४ ॥ अहा पिंगले माझे शयनीं ॥ होलीस  
 मृदु भाषणे करुनी ॥ पाहलां उर्वरी दिसे नथनीं ॥ संतोष माझा



म.सा.

१२

होतसे ॥ ३५ ॥ होसे पाहुन भुगंधद्रव्य मी ॥ ३६ ॥ जीधा लीं पट्ट पट्टा

मी ॥ होसे भुव सरि संग मी ॥ ३७ ॥ ले भुव कोठे पाहु आलां ॥ ३८ ॥

यापरी पेंगले लव गुण ॥ ३९ ॥ दये वे भंडार मुक्त करुन ॥ ४० ॥ कीं जगावे

करि मी पाकन ॥ ४१ ॥ धर्मा नुक् के सर्व स्त्री ॥ ४२ ॥ होसी या प्राप्ते

पहुड पण ॥ ४३ ॥ पेंगले कोठे मी जाऊन ॥ ४४ ॥ होसे मण्डन थहा हुन ॥ ४५ ॥

रणी आंग सांडीत से ॥ ४६ ॥ यापरी सर्व जाणुनि लोक ॥ ४७ ॥

चा पाहु निशोक ॥ ४८ ॥ गहिं वर ये लसे आणी ॥ ४९ ॥ शोक शब्द करु

नियं ॥ ५० ॥ कीं लरु मलि यागरा ॥ ५१ ॥ गंधी मिरवली समया ॥ ५२ ॥

ले से राया चारो कुपारा ॥ ५३ ॥ शोकें व्याकुलीत जाहले ॥ ५४ ॥

३५

३६

३७

३८

३९

४०

४१

४२

४३

४४

४५

४६

४७

४८

४९

५०

५१

५२

५३

५४

५५

५६

५७

५८

५९



असोहाग्रामंत वृत्तांत सक्कां ॥ ककलापरीमुखवशादुक्ता ॥ ७०

सप्राण जातुनी काका ॥ शव शरीश पुनराकी ॥ ७१ ॥ मगगांती

येयामजन ॥ मशानाजवक आलेखां वीन ॥ परीयाचा गोव

पाहून ॥ लेहीले सेच होली पै ॥ ७२ ॥ परीलोमाहुं महुज स्थिती ॥

दुःखरहित शोकावरती ॥ जे सेवदुरुपीरनेका प्रली ॥ गुरुचमि

रवती अपार ॥ ७३ ॥ श्रीं गुजरि देशी चाक सदन ॥ रुदनचे

ली मोक देऊन ॥ जे सेचरचे सर्व जिन ॥ आलेप्रेत संस्कार क

शवया ॥ ल न्याय शो क कुरित ॥ शव पदुला शोकार्ण वीला

नव ठवेलो आकांत ॥ अल्प येथें वार्णिका ॥ ७४ ॥ असो

होसी रुदन स्थिती ॥ ज्या चरी थाळा माया चिती ॥ परीले लोक



म.सा.

१६

अभावनृतीति॥ समजावेलीशयाते॥ १६॥ लुभीसर्व

इशककशरी॥ बोधकरितां अन्यजनांसो॥ होऊन

गेलेहोपाशरी॥ आश्रय्यायेकायसे॥ १७॥ म्

जलीमहाशजाभावेबोत्तर॥ होऊनगेलेलेहोपार॥ त

याचाशोककरणेचतुर॥ योग्यआहंदिसेना॥ १८॥ अ

शान्धताचाशोककरणे॥ तसेकायशाधतआपुलेजिणे

पिंगलागेकीआपणाहीजाणे॥ नदाभाकीमुटेना॥ १९॥

पहाआपुलेपूर्वजाआपार॥ मृषुपावलेसमग्र॥ एकासागेदक

सर्वत्र॥ गेलेनशहिलेमेदिनी॥ २०॥ कींआजगेलावुड

म.सा.

अ.०

२८

१६



रत्ना ॥ हेस्तकोणीराहेला ॥ लरीअशाधलाचाघटभरला ॥ रिला

होयधनमोने ॥ २१ ॥ लरीहे ~~सकक~~ सककभशाखतपणा ॥

पूर्णमोनेलीशानवान ॥ लरीतयाचाशोककरुन ॥ व्यर्थजो

वाकृष्टी ॥ २२ ॥ आहापाहलीजपीलपी ॥ सिद्धसाध

कनानारुपीमकोणवांचलेहेहसंकलपी ॥ मृदुभुवनीमहा

शपा ॥ २३ ॥ लरीजांजांजाइलचरी ॥ लीमुखचीचमाना

चीप्रोढी ॥ ईश्वरनामोठेवूनगोरी ॥ चिदास्थोरअसावे ॥ २४ ॥

हेसेंवा ॥ वेलांमर्हीजग ॥ युक्तिप्रयुक्तिनानाबोध ॥ हरी

शयाचेदृढयचांग ॥ शोककाजकीमुजकेना ॥ २५ ॥ मगते



भ.स.

१७

ग्रामीयेन वृक्षजन ॥ यावै लक्ष्मि ले बोध करु न ॥ एकाभागे

कठो न ॥ आपुल्या मदन सेवितौ ॥ २६ ॥ असो लीही कोट

लीश भी ॥ उदया आ लग भस्मौ ॥ पिंगला चेतो ची पाहू न शां

ती ॥ पाव कृष्णा का अदृश्य ॥ २७ ॥ मग तो मानू न दुःख रादी न ॥

पुनः पातले आस जन ॥ उत्तर क्रिया संपादो न ॥ अस्थि मि क

न के लेते ॥ २८ ॥ ले भर्तरी शिवे पाहू न ॥ चित्ती विचार करि

तां पूर्ण ॥ घे कुंदे ईना अस्थि संचन ॥ स्पर्श को पान करवौ ॥ २९ ॥

आपण बसुन चित्ता राक्षेत ॥ को पाला वुंदे ईना हल ॥ मग

आम जन समस्त ॥ पुनः गेले माधोरे ॥ ३० ॥ परी तो शिव लेख

नव

अ

२८

१७



।चै।चैलेता ॥ वसताहुता का दिवसरांत ॥ अन्नपाणीयजनस

मस्व ॥।पिंगलापिंगलामुपतसे ॥ ६१ ॥ मगहे।निर्वाणीचेवर्तभा

न ॥ मिथुकासीद्वसंगतीजगुन ॥ रावावेक्रमकारितांभव

ण ॥।निधलाहुताकातेयोनी ॥ ६२ ॥ भववर्मादिगुभावेक्रम ॥ वि

क्रमादिशुभतीप्रधान ॥ परमशोभापरिचयंन ॥ अवां।तिनेपात

ले ॥ ६३ ॥ मगयेतांवरमगानवरी ॥।पिंगलाभापूनचित

दृष्टी ॥ परमशोकें जाहलाकृष्टी ॥ शोभासिंधुलनिमग्न ॥ ६४ ॥

आठवीसर्वकृन्धेचेगुण ॥ मृणममहातीचेगेलेनिधान ॥

।विक्रममृणममगृहीचेरत्न ॥ काकलश्चरेनेलेनीं ॥ ६५ ॥



भ.सा.

१८

अहमा क्लीउभयकुक्षंता ॥ तारकद्वारा क्लीभवभरिलेन ॥

पुनराशीपाचौला वीवात ॥ अदृश्यकौसी सुतालीवो ॥ ६६ ॥

आहारी कटकीं अंतःपुरीं ॥ मुरव्यमिरवील होलीमहानक

हरी ॥ जे साहस्रीचमभीतरीं ॥ चांगुलपण दावेत मे ॥ ६७ ॥

रुपवंतगुणवंत ॥ सर्वकेशीं सुता नवंत ॥ सूचकसदा सर्वको

क संगोपित ॥ चित्तसकळं चें कक्षीकीं ॥ ६८ ॥ ऐसें आठवो

ति  
नानागुण ॥ शोचकरो अक्षरणा ॥ मग विक्रम नृपति फुटें

होऊन ॥ भटरीं लागीं सम जावो ॥ ६९ ॥ नानायुक्ती

वै

नव

अ

२८

१८



नानावचन ॥ भर्तरीचें बोधौ ॥ परीतो नाथके पिसार पण ॥

पिंगल पिंगल वदलसे ॥ ७० ॥ परीशव बोध करि लां तु तम ॥

लोह न गे लादि न दशम ॥ मग विष्णु मेरु तर क्रिया करुन ॥ शु

चिभूल जाहल ॥ ७१ ॥ यापरी पुढे लेखे देव गी ॥ जाती गो

जन दान मानेसी ॥ सर्व कर को न रा ज्यास नासी ॥ येऊ न राव

बेसल ॥ ७२ ॥ भर्तरी न सोडी समान वारि व्हा ॥ धरुन

बेसल अचक निव्हा ॥ जेसा वुंदे धरुनि हे व्हा ॥ विष्णु बेस

ल समानी ॥ ७३ ॥ ते से परी अचल पण ॥ मिरव लाझा ल मित्र

नंदन ॥ परी निल्या निल्या वै क्रम येऊन ॥ बोध लाले करी वसे

॥ ७४ ॥ तेसा बोध करि लां निल्य ॥ द्वादश वर्षे लोह लीं मलय ॥



पणभृगभक्षुनिगीवैल॥५६॥आहारेणविले॥७२॥अहोदेवा

अन्यथनासा॥कैसेकेलेलांअनंता॥पिंगलाभाहरीमगुपकां

ता॥तुलेकैसीआवडुकी॥७६॥होसोह्योननासोचार॥

शेककरीलसेवारंवार॥शभंदिवसाचेतीविभर॥पिंगलेचाप

डेना॥७७॥कुरुशरीरज्ञालेलेभे॥कंठीरुलसेप्राप॥

मुखींआणूनहरीचेनाम॥शोकापिंगलवदलसे॥७८॥होसीं

कोटलींद्वादशवर्षे॥शुचिमिलज्ञालेशरीरकुरु॥लेपाहूनि

याआलेवृक्ष॥मिआवरणीद्रवलासे॥पुत्रमोहाचेअपारभले॥

कोटकोचेलेसरिले॥मगमिआवरुणीतुष्टुनमनांत॥अत्रि

जानिकरींआलाह्याला॥८०॥रवलेप्राहरीकअत्रिनंदन॥



मिआवरुणीसममानदेऊन ॥ मणेमहाराजकामनाकाण ॥ ५३

नयेथे आलासो ॥ ५४ ॥ येथेहणे जोद्विजोत्तमा ॥ इमानलतिके

आफूकटमा ॥ जाणत असानेपुससो आसो ॥ अज्ञानलवचे

ऊनी ॥ लरीतवशिष्य जोभर्तरी ॥ यासीके सोझाली परी ॥

तेंदूदयीं आपूनहिलांतेवरौ ॥ विलोकिंकांमहाराजा ॥ ५५ ॥ म

गलोमहाराजज्ञानवान ॥ दूदयींपोहेविचारुन ॥ लोविपका

कींशोकेकरुन ॥ भर्तरीनाथामिरविला ॥ ५६ ॥ अतिके

शलयाचेंपाहून ॥ परमद्रवलासोहेंकरुन ॥ मगमिआवरुणीं

तेंबोलेवचन ॥ चिंतानकरींमहाराजा ॥ ५७ ॥ लुप्तो जावें

स्वस्थानासो ॥ मीभर्तरीलो आहेउद्येशीं ॥ स्वहितकरीन



म.स. चैत्तामानसी ॥ पाकून कामहागजा ॥ ८६ ॥ माइता शीष्य जो

२०

मचिउं न्नाथ ॥ लयाचा गोरक्ष प्रज्ञावंत ॥ तो मही भ्रमलोफरी

नतीर्थी ॥ येथेथेडेकमहागजा ॥ ८७ ॥ तो परम आहे प्रज्ञावान

लयाला तेथे पाठवीन ॥ लोनाना प्रयुक्ती करुन ॥ गुह्यपं

था आणीतकीं ॥ ८८ ॥ ऐसें बोलता मित्रावरुणीसी ॥ संतोषे

मिरवला तो चैत्तासी ॥ मग पुसुन अनुसुयास जासी ॥ स्वस्था

नासीं पै गेल ॥ ८९ ॥ यावरी पुढील अध्यायीं कथा सुंदर ॥ अ

ध्यामदीपिका मनोहर ॥ मातृसांगे धुंडी कुमर ॥ नरहरि कृपेक

शोनेयां ॥ ९० ॥ दत्तसांगे लगेरक्षनाथा ॥ गोरक्ष येऊनि

विरह मारिता ॥ गोषण करी कलवती ॥ च वरोद्वेषाचे वृत्ते ने ॥ ९१ ॥

नव

म.

२८

२०



स्वस्ति श्री भक्ति कथासार ॥ संमत गोरक्ष का


व्याक्रमयागर ॥ सदापरिस्मृत भावैकचतुर ॥

अष्टाविंशति अध्याय गोदुर ॥ २८ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ श्री गुरुदत्ता त्रयचरणा विंदे

र्पणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥



  
नवनाथ <sup>श्री</sup> अध्याय २८  
संपूर्ण म स्तु. ॥



[OrderDescription]  
,CREATED=28.07.20 16:24  
,TRANSFERRED=2020/07/28 at 16:30:39  
,PAGES=43  
,TYPE=STD  
,NAME=S0003401  
,Book Name=M-2704-SHRINAVNATH ADHYAY-28  
,ORDER\_TEXT=  
,[PAGELIST]  
,FILE1=00000001.TIF  
,FILE2=00000002.TIF  
,FILE3=00000003.TIF  
,FILE4=00000004.TIF  
,FILE5=00000005.TIF  
,FILE6=00000006.TIF  
,FILE7=00000007.TIF  
,FILE8=00000008.TIF  
,FILE9=00000009.TIF  
,FILE10=00000010.TIF  
,FILE11=00000011.TIF  
,FILE12=00000012.TIF  
,FILE13=00000013.TIF



FILE14=00000014.TIF  
,FILE15=00000015.TIF  
,FILE16=00000016.TIF  
,FILE17=00000017.TIF  
,FILE18=00000018.TIF  
,FILE19=00000019.TIF  
,FILE20=00000020.TIF  
,FILE21=00000021.TIF  
,FILE22=00000022.TIF  
,FILE23=00000023.TIF  
,FILE24=00000024.TIF  
,FILE25=00000025.TIF  
,FILE26=00000026.TIF  
,FILE27=00000027.TIF  
,FILE28=00000028.TIF  
,FILE29=00000029.TIF  
,FILE30=00000030.TIF  
,FILE31=00000031.TIF  
,FILE32=00000032.TIF  
,FILE33=00000033.TIF  
,FILE34=00000034.TIF  
,FILE35=00000035.TIF



FILE36=00000036.TIF

,FILE37=00000037.TIF

,FILE38=00000038.TIF

,FILE39=00000039.TIF

,FILE40=00000040.TIF

,FILE41=00000041.TIF

,FILE42=00000042.TIF

,FILE43=00000043.TIF

,